

---

# Shri Ramakrishna Stotradashakam

---

## श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम्

---

### Document Information

Text title : Shri Ramakrishna Stotradashakam

File name : rAmakRRiShNastotradashakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmakRiShNa, dashaka, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Virajananda

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramALA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम्



ब्रह्म-रूपमादि-मध्य-शेष-सर्वभासकं  
भावषट्कहीनरूप नित्यसत्यमद्वयम् ।  
वाङ्मनोऽति-गोचरञ्च नेति-नेति भावितं  
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ १ ॥

आदितेय भीहरं सुरारिदैत्यनाशकं  
साधु-शिष्ट-कामदं महीसुभार हारकम् ।  
स्वात्मरूपतत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं  
तं नमामि देव-देव रामकृष्णमीश्वरम् ॥ २ ॥

सर्व-भूत-सर्ग-कर्म-सूत्र-बन्ध कारणं  
ज्ञान-कर्म-पाप-पुण्य-तारतम्य साधनम् ।  
बुद्धि-वास-साक्षि-रूप-सर्व-कर्म-भासनं  
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ३ ॥


सर्व-जीव-पाप-नाश कारणं भवेश्वरं  
स्वीकृतं च गर्भवास देह पापमीदृशम् ।  
यापितं स्वलीलया च येन दिव्यजीवनं  
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ४ ॥

तुल्य लोष्ट-काञ्चनं च हेय नेय धीगतं  
स्त्रीषु-नित्य-मातृरूप शक्तिभाव भावुकम् ।  
ज्ञानभक्ति भुक्ति मुक्ति शुद्ध बुद्धि दायकं  
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ५ ॥

सर्व-धर्म-गम्यमूल-सत्य-तत्त्व-देशकं  
सिद्ध सर्व सम्प्रदाय साम्प्रदाय वर्जितम् ।  
सर्वशास्त्रमर्मदर्शि सर्व विन्निरक्षरं  
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ६ ॥

चारुदर्श-कालिका सुगीत-चारु-गायकं  
 कीर्तनेषु मत्तवच्च नित्य-भाव विह्वलम् ।  
 सूपदेश-दायकं हि शोक-ताप-वारकं  
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ७ ॥  
 पाद-पद्म-तत्त्व-बोध-शान्ति-सौख्य-दायकं  
 सक्तचित्त-भक्त-सूनु-नित्य-वित्तवर्द्धकम् ।  
 दम्भि-दर्प-दारणं तु निर्भयं जगद्गुरुं  
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ८ ॥  
 पञ्चवर्ष बालभाव युक्तहंसरूपिणं  
 सर्वलोकरञ्जनं भवाब्धि सङ्ग भञ्जनम् ।  
 शान्ति-सौख्य सद्मजीव जन्मभीति नाशनं  
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ९ ॥  
 धर्महानहारकं त्वधर्मकर्मवारकं  
 लोकधर्मचारणं च सर्वधर्मकोविदम् ।  
 त्यागि गोहि सेव्य नित्य पावनाङ्घ्रि पङ्कजं  
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ १० ॥  
 स्तोत्र-शून्य-सोमकं सदीश-भाव-व्यञ्जकं  
 नित्य-पाठकस्य वै विपत्ति-पुञ्ज-नाशकम् ।  
 स्यात् कदापि जाप याग-योग-भोग-सौलभं  
 दुर्लभं तु रामकृष्ण-राग-भक्ति-भावनम् ॥ ११ ॥  
 इति श्रीविरजानन्दरचितं भक्तिसाधकम् ।  
 स्तवसारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्ण तूणकम् ॥ १२ ॥

Proofread by Aruna Narayanan

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

